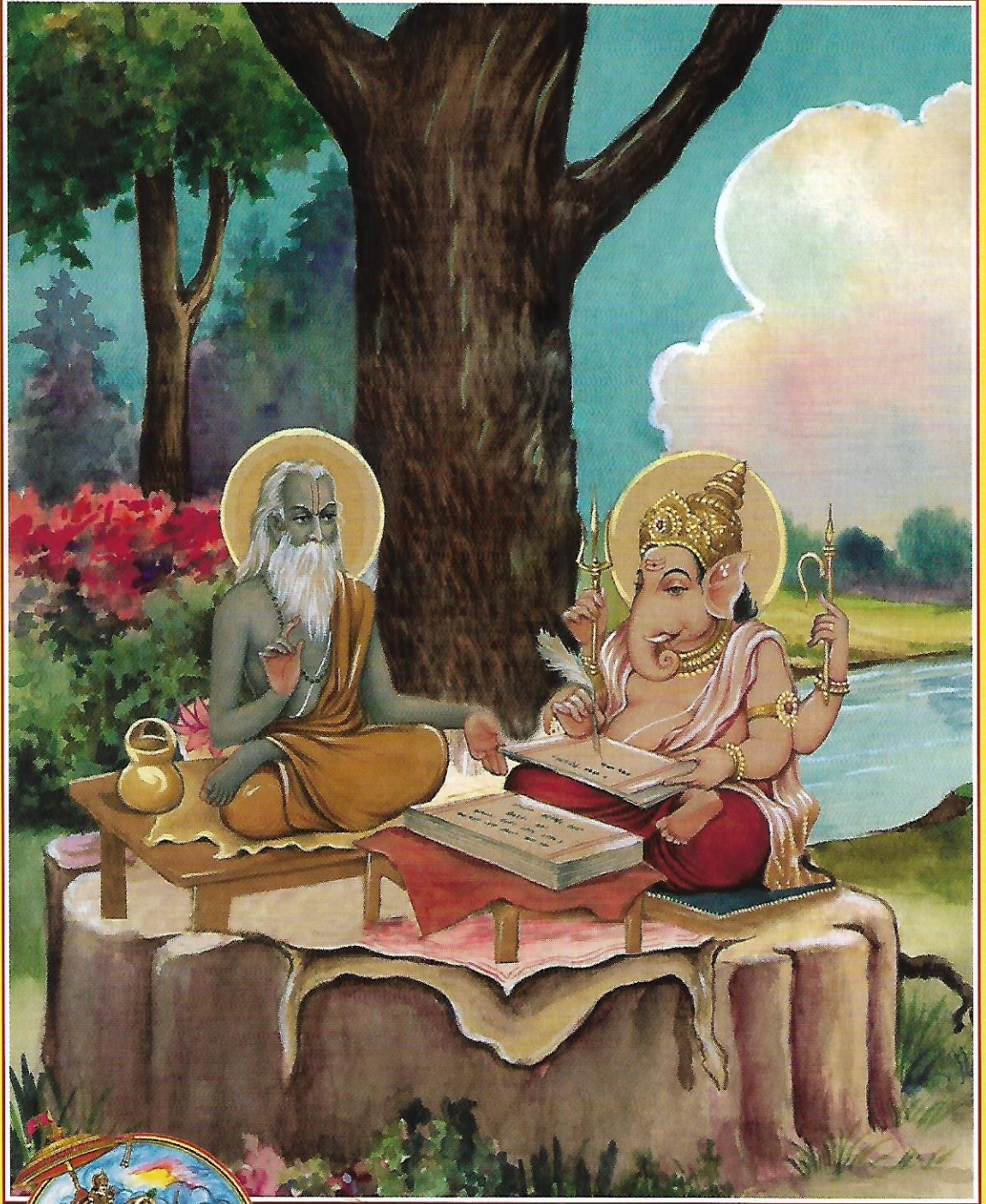


संक्षिप्त महाभारत

[द्वितीय खण्ड]



गीताप्रेस, गोरखपुर

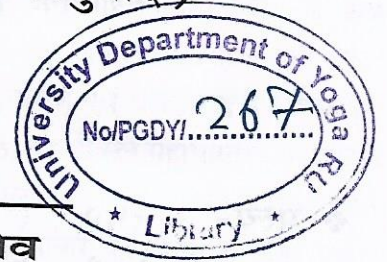
॥ श्रीहरिः ॥

संक्षिप्त महाभारत

(द्वितीय खण्ड)

[कर्णपर्व, शल्यपर्व, सौप्तिकपर्व, स्त्रीपर्व, शान्तिपर्व,
अनुशासनपर्व आश्वमेधिकपर्व, आश्रमवासिकपर्व, मौसलपर्व,
महाप्रास्थानिकपर्व तथा स्वर्गारोहणपर्व]

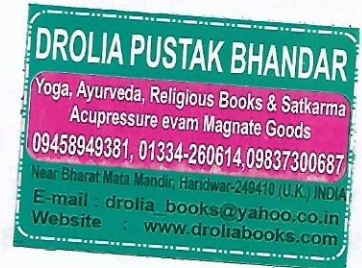
(महाभारतका सरल, सचित्र हिंदी-अनुवाद)



त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥

सम्पादक तथा संशोधक—

जयदयाल गोयन्दका



गीताप्रेस, गोरखपुर

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या	विषय	पृष्ठ-संख्या
कर्णपर्व			
१- कर्णके सेनापतित्वमें युद्धका आरम्भ और भीमके द्वारा क्षेमधूर्तिका वध	२५	१५- कर्ण और युधिष्ठिरका संग्राम, कर्णकी मूर्च्छा, कर्णद्वारा युधिष्ठिरका पराभव तथा भीमके द्वारा कर्णका परास्त होना	६०
२- विन्द-अनुविन्द और चित्रसेन तथा चित्रका वध, अश्वत्थामा और भीमसेनका भयंकर युद्ध	२७	१६- भीमसेनके द्वारा धृतराष्ट्रके कई पुत्रों तथा कौरवयोद्धाओंका भीषण संहार	६२
३- संशप्तकों और अश्वत्थामाके साथ अर्जुनका घोर संग्राम, अर्जुनके हाथसे दण्डधार और दण्डका वध	२९	१७- अर्जुनद्वारा संशप्तकोंका संहार	६५
४- अर्जुनके द्वारा संशप्तकोंका तथा अश्वत्थामाके हाथसे राजा पाण्ड्यका वध	३१	१८- कृपाचार्यके द्वारा शिखण्डीकी पराजय, सुकेतुका वध, धृष्टद्युम्नके द्वारा कृतवर्मा और दुर्योधनका परास्त होना तथा कर्णद्वारा पांचाल आदि महारथियोंका संहार	६६
५- अंगराजका वध, सहदेवके द्वारा दुःशासनकी तथा कर्णके द्वारा नकुलकी पराजय और कर्णद्वारा पांचालोंका संहार	३३	१९- अर्जुनके द्वारा संशप्तकोंका संहार और अश्वत्थामाकी पराजय	६८
६- उलूक-युयुत्सु, श्रुतकर्मा-शतानीक, शकुनि-सुतसोम और शिखण्डी-कृतवर्माके द्वन्द्वयुद्ध; अर्जुनके द्वारा अनेकों वीरोंका संहार तथा दोनों ओरकी सेनाओंमें घमासान युद्ध ...	३६	२०- अश्वत्थामाकी प्रतिज्ञा, धृष्टद्युम्न और कर्णका युद्ध, अश्वत्थामाके द्वारा धृष्टद्युम्नकी और अर्जुनके द्वारा अश्वत्थामाकी पराजय	६९
७- दुर्योधन और कर्णका राजा युधिष्ठिर, अर्जुन एवं सात्यकिके साथ संग्राम	३८	२१- भगवान् श्रीकृष्णद्वारा अर्जुनसे कौरवोंके आक्रमण तथा भीमके पराक्रमका वर्णन ..	७१
८- कर्णके प्रस्ताव और दुर्योधनके आग्रहसे शल्यका आनाकानीके बाद कर्णका सारथि बनना स्वीकार करना	४०	२२- दोनों पक्षके योद्धाओंका द्वन्द्वयुद्ध तथा भीमसेनका पराक्रम	७२
९- त्रिपुरोंकी उत्पत्ति और उनके नाशका प्रसंग	४३	२३- कर्णसे पराजित और घायल होकर युधिष्ठिरका अपनी छावनीमें विश्रामके लिये जाना	७४
१०- शल्यको सारथि बनाकर कर्णका युद्धके लिये प्रयाण	४६	२४- अर्जुनद्वारा अश्वत्थामाकी पराजय, कर्णद्वारा भार्गवास्त्रका प्रयोग, श्रीकृष्ण और अर्जुनका युधिष्ठिरसे मिलनेके लिये छावनीपर जाना तथा युधिष्ठिरका उनसे कर्णके मारे जानेका समाचार पूछना	७५
११- शल्यके सारथ्यमें कर्णका युद्धभूमिके लिये प्रस्थान और दोनोंका कटु-सम्भाषण	४८	२५- अर्जुनकी बातसे कर्णके जीवित रहनेका पता पाकर युधिष्ठिरका उन्हें धिक्कारना तथा युधिष्ठिरका वध करनेके लिये उद्यत हुए अर्जुनको भगवान्द्वारा धर्मका तत्त्व समझाया जाना	७८
१२- राजा शल्यका कर्णको एक हंस और कौएका उपाख्यान सुनाना	५१	२६- भगवान् कृष्णका अर्जुनको प्रतिज्ञाभंग, भ्रातृवध तथा आत्मघातसे बचाना और युधिष्ठिरको वन जानेसे रोकना	८२
१३- कर्ण और शल्यका कटु-सम्भाषण और दुर्योधनका उन्हें समझाना	५४	२७- अर्जुनका युधिष्ठिरसे क्षमा माँगना, युधिष्ठिरका	
१४- कौरव-व्यूहनिर्माण, कर्ण और शल्यकी बातचीत, अर्जुनद्वारा संशप्तकोंका, कर्णद्वारा पांचालोंका तथा भीमद्वारा भानुसेनका संहार और सात्यकिके वृषसेनकी पराजय	५६		

विषय	पृष्ठ-संख्या	विषय	पृष्ठ-संख्या
अर्जुनको आशीर्वाद देना, अर्जुनकी रणयात्रा और भगवान् कृष्णद्वारा अर्जुनके पराक्रमका वर्णन	८५	४०- भीम और अर्जुन आदिके भयसे दुर्योधनके रोकनेपर भी कौरव-सेनाका भागना तथा दोनों ओरकी सेनाओंका शिविरमें जाना ..	१२०
२८- अर्जुनके वीरोचित उद्गार, दोनों पक्षकी सेनाओंमें द्वन्द्वयुद्ध, सुषेणका वध, भीमसेनका पराक्रम तथा अर्जुनके आनेसे उनकी प्रसन्नता	९०	४१- कर्णवधके समाचारसे प्रसन्न हुए युधिष्ठिरद्वारा श्रीकृष्ण और अर्जुनकी प्रशंसा, राजा धृतराष्ट्र और गान्धारीका शोक तथा कर्णपर्वके श्रवणका माहात्म्य	१२२
२९- अर्जुन और भीमसेनके द्वारा कौरव-सेनाका संहार, भीमके हाथसे शकुनिका मूर्च्छित होना	९३	शल्यपर्व	
३०- कर्णकी मारसे पाण्डव-सेनाका पलायन, श्रीकृष्ण और अर्जुनको आते देख शल्य और कर्णकी बातचीत तथा अर्जुनद्वारा कौरव-सेनाका विध्वंस	९४	४२- धृतराष्ट्रका विषाद; कृपाचार्यका दुर्योधनको सन्धिके लिये समझाना, किंतु दुर्योधनका युद्धके लिये ही निश्चय करना.....	१२३
३१- अर्जुन और भीमसेनके द्वारा कौरववीरोंका संहार तथा कर्णका पराक्रम.....	९७	४३- राजा शल्यका सेनापतिके पदपर अभिषेक और भगवान् श्रीकृष्णका युधिष्ठिरको शल्यसे लड़नेके लिये आदेश	१२४
३२- भीमद्वारा दुःशासनका रक्त-पान और उसका वध, युधामन्युद्वारा चित्रसेनका वध तथा भीमका हर्षोद्गार	१००	४४- शल्यके सेनापतित्वमें युद्धका आरम्भ और नकुलद्वारा कर्णके शेष तीनों पुत्रोंका वध	१२५
३३- धृतराष्ट्रके दस पुत्रोंका वध, कर्णका भय और शल्यका समझाना, नकुल और वृषसेनका युद्ध, अर्जुनद्वारा वृषसेनका वध तथा कर्णके विषयमें श्रीकृष्ण-अर्जुनकी बातचीत.....	१०३	४५- शल्यका युधिष्ठिर और भीमसेनके साथ युद्ध, दुर्योधनद्वारा चेकितानका तथा युधिष्ठिरद्वारा द्रुमसेनका वध	१२६
३४- इन्द्रादि देवताओंकी प्रार्थनासे ब्रह्मा और शिवजीका अर्जुनकी विजय घोषित करना तथा कर्णका शल्यसे और अर्जुनका श्रीकृष्णसे वार्तालाप	१०७	४६- राजा शल्यका पराक्रम, अर्जुन-अश्वत्थामाका युद्ध तथा राजा सुरथका वध.....	१२६
३५- अश्वत्थामाका दुर्योधनसे सन्धिके लिये प्रस्ताव, दुर्योधनद्वारा उसकी अस्वीकृति तथा कर्ण और अर्जुनके युद्धमें भीम और श्रीकृष्णका अर्जुनको उत्तेजित करना	१०९	४७- शल्यका पराक्रम तथा शल्यके साथ युधिष्ठिरका युद्ध	१२८
३६- कर्ण और अर्जुनका युद्ध.....	१११	४८- शल्यका वध	१४०
३७- भगवान्द्वारा अर्जुनकी सर्पमुख बाणसे रक्षा तथा अश्वसेन नागका वध	११३	४९- मद्रराजके अनुचरोंका वध, कौरव-सेनाका पलायन, भीमद्वारा इक्कीस हजार पैदलोंका संहार और दुर्योधनका अपनी सेनाको उत्साहित करना	१४२
३८- अर्जुनके प्रहारसे कर्णकी मूर्च्छा, पृथ्वीमें धँसे हुए पहियेको निकालते समय कर्णका धर्मकी दुहाई देना और भगवान्का उसे फटकारना	११५	५०- शाल्वका वध, सात्यकि और कृतवर्माका युद्ध तथा दुर्योधनका पराक्रम	१४५
३९- कर्णका वध और शल्यका दुर्योधनको सान्त्वना देना	११८	५१- दोनों सेनाओंका घोर संग्राम और शकुनिका कूट-युद्ध	१४७
		५२- अर्जुनद्वारा श्रीकृष्णसे दुर्योधनकी अनीतिका कुपरिणाम बताया जाना तथा कौरवोंकी रथसेना और गजसेनाका संहार.....	१४९
		५३- भीमद्वारा धृतराष्ट्रके बारह पुत्रोंका वध, श्रीकृष्ण और अर्जुनकी बातचीत तथा अर्जुनद्वारा त्रिगर्तोंका संहार	१५१



GITA PRESS, GORAKHPUR [SINCE 1923]

गीताप्रेस, गोरखपुर — २७३००५

फोन : (०५५१) २३३४७२१, २३३१२५०; फैक्स : २३३६९९७